उपसंहार

उपसंहार

'अनुत्तर योगी तीर्थंकर महावीर' का जीवनीपरक उपन्यास के परिप्रेक्ष्य में अनुशीलन करने के उपरांत निम्नलिखित निष्कर्ष सामने आए हैं। उनका निचोड यहाँ सार रूप में प्रस्तुत है -

वीरेंद्रकुमार जैन : सृजनशील व्यक्तित्व एवं कृतित्व :

वीरेंद्रकुमार जैन हिंदी साहित्यिक जगत में प्रमुख रचनाकारों में से एक है। उनकी रचनाओं में पुराण, इतिहास कल्पना का मणिकांचन संयोग मिलता है। वह एक ऐसे कथाकार है जिन्हें सांस्कृतिक मूल्यों के नव व्याख्याकार और दार्शनिक रचनाकार कहा जा सकता है। इनकी रचनाओं में आध्यात्म, मनोविज्ञान, दर्शन, सामाजिक सत्य और जीवन तथ्य सब एक साथ मुखरित हुए हैं । अत: वह देश, वह धरती, वह अंचल और वह साहित्य धन्य है, जिसमें विरेंद्रकुमार जैन जैसे शब्दवेधि साहित्यकार का जन्म हुआ है।

जीवनीपरक उपन्यास का तात्विक विवेचन :

प्रस्तुत अध्याय में जीवनीपरक उपन्यास पर दृष्टि डालने से पूर्व हमने जीवनी विधा का अध्ययन किया। जीवनी में जीवनीकार किसी व्यक्ति विशेष का लेखा-जोखा करता है। जीवनी किसी व्यक्ति के जीवन का लिखित अभिलेख है। इन सभी का अंतर्भाव होते हुए भी वह एक साहित्यिक विधा भी है। वह इतिहास के साथ-साथ कलात्मकता को भी लिए चलती है। जीवनी में एक व्यक्ति के जीवन का वृत्तांत होता है। वह ऐतिहासिकता से युक्त होती है। यहाँ लेखक की तटस्थता भी अनिवार्य है। जीवनी वैज्ञानिक होती है। यहाँ नायक के मनोदशा का विश्लेषण होता है। उसे साहित्यिक भाषा द्वारा संजोया जाता है। यहाँ मानवीयता भी दिखाई देती है। अत: उपर्युक्त तत्वों से युक्त जीवनी सफल साहित्यिक कृति कही जा सकती है। जीवनी विधा के बीज प्राचीन काल के शिलालेखों, हस्तलिपियों में बोए गए। संस्कृत, पाली प्राकृत और अपभ्रंश में अनेक जीवनियाँ लिखी गई। हिंदी साहित्य में इसका प्रवेश आदिकाल से दिखाई देता है। आदिकाल के रासक ग्रंथ इसके प्रमाण है। भक्तिकाल में 'भक्तमाला', 'रैदास की परचई' आदि ग्रंथ जीवनी साहित्य की परंपरा में आते हैं। रीतिकाल में भी अनेक दरबारी कवियों ने जीवनी साहित्य का सृजन किया था। रीतिकाल तक जीवनी साहित्य प्रमुखता पद्य में लिखा गया, परंतु आधुनिक युग में जीवनी साहित्य गद्य में लिखने की पद्धति भारतेन्दू से प्रारंभ हुई। भारतेन्दू जी ने जीवनी साहित्य में नई चेतना भर दी। इस युग

में अनेक साहित्यकारों एवं ऐतिहासिक महापुरूषों पर जीवनियाँ लिखी गई। द्विवेदी युग, प्रेमचंद युग में जीवनी साहित्य का विकास सर्वोच्च स्थान पर पहुँचा। आज साधारण व्यक्ति पर भी जीवनियाँ लिखी जाने लगी। आधुनिक जीवन बोध के अनेक समस्याओं से घिरा साधारण मनुष्य भी जीवनी विधा का नायक बन गया।

जीवनीपरक उपन्यास के बीज सन 1903 में बोए गए। उपन्यास विधा का अभ्यूदय तथा उसमें नायक के जीवन से संबंधित कथानक में जीवनीपरक उपन्यास के बिजांकूर दिखाई देते हैं। जीवनीपरक उपन्यास का एक छोर जीवनी से तथा दूसरा छोर उपन्यास से जुड़ा होने के कारण दोनों के तत्व यहाँ एक साथ मिलते हैं। उसका स्वरूप भी दोनों विधाओं को अपने आप में समा लेता है। उपन्यास के सभी तत्व यहाँ मिलते हैं। जीवनीपरक उपन्यास के अभ्यूदय के बाद चार-पाँच दशक तक एक भी जीवनीपरक उपन्यास लिखा नहीं गया। सन 1940 के बाद रांगेय राघव का जीवनीपरक उपन्यास में प्रवेश प्रस्तुत विधा को विकास के सर्वोच्च शिखर पर ले जाता है। रांगेय जी ने जीवनीपरक उपन्यास में नई चेतना एवं नए रंग भर दिए। इनके बाद वीरेंद्रकुमार रतुगडी (मीरा बावरी), अमृतलाल नागर (मानस का हंस), वीरेंद्रकुमार जैन (अनुत्तर योगी), नरेंद्र कोहली (दीक्षा, अवसर, संघर्ष की ओर, तोडो करा तोडो) विश्वंभर उपाध्याय (जाग मच्छंदर गोरख आया), भगवतिशरण मिश्र (पुरूषोत्तम) आदि प्रमुख जीवनीपरक उपन्यासकार रहे। अत: आज जीवनीपरक उपन्यास अधिक मात्रा में लिखे जा रहे हैं। किसी साधारण चरित्र पर भी जीवनीपरक उपन्यास लिखे जा रहे हैं।

अत: जीवनी और जीवनीपरक उपन्यास कथा साहित्य की प्रमुख विधाएँ हैं। कथावस्तु एवं घटनाक्रम की दृष्टि से जीवनीपरक उपन्यास अधिक स्वतंत्र है। पात्रों की दृष्टि से जीवनी में काल्पनिक पात्रों की निर्मिती नहीं की जा सकती। परंतु जीवनीपरक उपन्यास में योग्यता के अनुसार काल्पनिक पात्रों का प्रयोग किया जाता है। जीवनी में संवादों का प्रयोग अत्यंत ध्यान से किया जाता है तो जीवनीपरक उपन्यास में संवादों का प्रयोग कल्पना के आधार पर किया जाता है। वातावरण निर्मिती के अंतर्गत जीवनीकार सतर्क रहता है तो जीवनीपरक उपन्यासकार प्रसंगानुसार रोचकता के हेतु वातावरण निर्मिती को कल्पना का रूप भी देता है। भाषा के दृष्टि से देखा जाय तो जीवनी एवं जीवनीपरक उपन्यास में पर्याप्त अंतर दिखाई देते हैं। जीवनीपरक उपन्यास में उद्देश्य की अधिक व्यापकता दिखाई देती है। शीर्षक की दृष्टि से भी जीवनीपरक उपन्यास जीवनी की अपेक्षा स्वतंत्र है। इस प्रकार जीवनीपरक उपन्यास, जीवनी और उपन्यास की विशेषताएँ अपने आप में समा लेता है। अत: जीवनीपरक उपन्यास एक

ऐसी विधा है जहाँ हमें जीवनी तथा उपन्यास, इतिहास तथा कल्पना का मणिकांचन संयोग निलता है।

'अनुत्तर योगी' एक युग बोध (सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक) :

भगवान महावीर के समकालीन परिवेश को अनुत्तर योगी में वीरेंद्रकुमारजी ने यथार्थ रूप में रखा है। उपन्यास में चित्रित सांस्कृतिक परिवेश के आधार पर हम कह सकते हैं कि समकालीन सांस्कृतिक परिवेश आधुनिक भारत का आदर्श है। आज समाज में जो सांस्कृतिक विधियाँ मनाई जाती है उसका श्रेय प्राचीन संस्कृति को ही देना होगा। इसी परिणाम स्वरूप विश्व के विभिन्न देश भारतीय संस्कृति की ओर सम्मान से देखते हैं। अत: अनुत्तर योगी में चित्रित सांस्कृतिक परिवेश भारतीय जनता का मानदंड है। लेखक ने समकालीन सामाजिक परिवेश को भी लिपिबद्ध किया है। समाज में स्थित आर्थिक, बौद्धिक और धार्मिक विषमता की ओर दृष्टि डाली है। समकालीन नगर एवं ग्राम व्यवस्था में स्थित शोषण वृत्ति का यहाँ परिचय मिलता है। मुट्ठीभर जनता ने अपने आर्थिक विकास के बलबूतेपर सारे समाज पर अपना प्रभुत्व जमा लिया था। उच्चवर्गीय जनता निम्नवर्गीय समाज को अपना साधन बना चुकी थी। इस प्रकार की विषमता का वास्तविक रूप उपन्यास में मिलता है। समकालीन राजनीतिक पृष्ठभूमि भी अत्यंत संघर्षमय थी। गणतंत्र तथा एक छत्र राज्य व्यवस्था दोनों में अंतर्गत कलह थे। गणतंत्र व्यवस्था दिखाऊ मात्र थी। वास्तव में वह कुलतंत्र व्यवस्था थी। गणतंत्र के नाम पर एक भयानक साजिश यहाँ रची गई थी। समकालीन एक छत्र शासन व्यवस्था कांचन, कामिनी और साम्राज्य विस्तार के लालसा पर पनप रही थी। कांचन और कामिनी के लिए हजारों लोगों को मौत के घाट उतार दिया जाता था। क्षत्रिय वर्ण रक्षक के स्थान से भक्षक बन गया था। समकालीन धर्म व्यवस्था ब्राह्मण वर्ण का ठेकेदार बन चुकी थी। धर्म के नाम पर अनेक बाह्यांडबर एवं कुप्रथाएँ इन्होंने चलाया था। इस प्रकार के दूषित परिवेश को उलट-पुलट देने के लिए भगवान महावीर जैसे अनुत्तर योगी का अभ्युदय हुआ। अत: 'अनुत्तर योगी' का प्रथम खंड इन विषम परिस्थितियों को नि:संकोच पाठकों के सामने रखने में सफल हुआ है।

'अनुत्तर योगी' में चित्रित भगवान महावीर का जीवन :

अनुत्तर योगी वास्तव में क्रांतिकारी युगपुरूष भगवान महावीर का ही दूसरा जन्म है। प्रस्तुत उपन्यास के उपर्युक्त विवरणों से हम निम्नलिखित निष्कर्ष तक पहुँच सकते

हैं। अनुत्तर योगी चार खंडों में विभाजीत भगवान महावीर की जीवनयात्रा है। प्रथम खंड 'तीर्थंकर का धर्म चक्र प्रवर्तन' में भगवान महावीर के पूर्व भवों से लेकर महाअभिनिष्क्रमण तक की घटनाओं का चित्रण है। यहाँ लेखक ने भगवान महावीर के पूर्व भवों को अत्यंत रोचकता से रखा है। भगवान का जन्मसमारोह, नामकरण, बाललीलाएँ आदि का वर्णन 'सूर सागर' की याद दिलाता है। साथ-साथ महाभिषिक्रमण तक की घटनाओं में समकालीन जन-जीवन का भी परिचय मिलता है। द्वितीय खंड 'असिधारा पथ का यात्री' भगवान महावीर के जीवन की संघर्ष यात्रा से व्याप्त है। इस खंड में भगवान के साढे बारह वर्ष की कठोर साधना का चित्रण मिलता है। यह साढे-बारह वर्ष भगवान महावीर के जीवन में अत्यंत महत्त्वपूर्ण रहे। अनेक संकटों का सामना करते भगवान महावीर आत्मा की खोज में निरंतर चलते रहें। वास्तव में यह काल उनके लिए तलवार की नोंक पर चलने के समान था। अनेक उपद्रवों से घिरे भगवान महावीर मौन रहकर उनपर विजय प्राप्त करते हैं। तृतीय खंड 'तीर्थंकर का धर्म चक्र प्रवर्तन' में केवल लाभ के बाद की घटनाओं को सामने रखा है। यहाँ इंद्रभूति गौतम का शिष्यत्व लेना, प्रथम धर्म देशना, विभिन्न प्रदेशों में समवसरण का आयोजन आदि घटनाओं का चित्रण मिलता है। चतुर्थ खंड 'अनंत पुरूष की जय यात्रा' में अनेक देश के राजा-रानी, राजकुमार, भगवान महावीर के समवसरण में आकर प्रवज्या ग्रहण करते हैं। अत: उपन्यास में चित्रित भगवान महावीर के जीवन को लेखक ने युगपुरूष के रूप में रखा है। यहाँ महावीर मानव धर्म के प्रतिनिधी दिखाई देते हैं। द्वितीय खंड में चित्रित भगवान महावीर का जीवन पाठकों को अधिक भावविभोर करता है। यहाँ लेखक ने भगवान महावीर के संघर्षमय जीवन का चित्रण अत्यंत प्रभावपूर्ण ढंग से किया है। अत: भगवान महावीर जैसे युगपुरूष को लिपिबद्ध करके उनके जीवन को नई दृष्टि से देखने का कार्य लेखक ने किया है।

'अनुत्तर योगी' में चित्रित भगवान महावीर का जीवन दर्शन :

प्रस्तुत अध्याय में अनुत्तर योगी के महानायक भगवान महावीर के जीवन दर्शन पर दृष्टिक्षेप किया गया है। भगवान महावीर का दर्शन जैन तीर्थंकरों से प्रभावित है। प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने भगवान महावीर को एक युग पुरूष के रूप में रखने के कारण यहाँ नायक का जो जीवन दर्शन है वह समष्टि का रूप धारण कर चुका है। यहाँ वह अखंड मानव जाति के कल्याण के लिए अपना महाभिनिष्क्रमण चलाते हैं। उनका दर्शन हर युग में समीचीन प्रतित होता है। प्रस्तुत अध्याय में प्रथम मैंने उनके त्री-रत्नों पर दृष्टि डाली है। सम्यक ज्ञान, सम्यक् दर्शन, सम्यक् चारित्र्य त्रीरत्न है, जो मोक्ष मार्ग के साधन हैं। त्री-रत्नों के प्राप्ति के बाद मनुष्य जाति दु:ख से दूर परम, अनंत में विलीन हो जाती है। सम्यक् ज्ञान का अभिप्राय है

सम्यक् जानना, सम्यक् देखना तथा सच्चे दर्शन, सच्चा सिद्धांत, सच्चा शास्त्र, गुण आदि पर श्रद्धा रखना। सम्यक् ज्ञान से अभिप्रेत है सम्यकत्व सहित ज्ञान की प्राप्ति, वस्तु स्वरूप का बोध सम्यक ज्ञान है। सम्यक् चरित्र का तात्पर्य है सम्यक दर्शन एवं सम्यक ज्ञान के बिना सम्यक चरित्र की प्राप्ति असंभव है। अत: सत्य की अनुभूति एवं सत्य का ज्ञान होना और उसके अनुसार अपना व्यक्तित्व रखना सम्यक् चरित्र है। भगवान महावीर ने सुखमय जीवन के लिए पाँच महाव्रतों का आयोजन किया है। प्रथम महाव्रत है अहिंसा। अहिंसा तीन प्रकार की होती है - काया, मन, वचन इन पर प्रभुत्व रखकर मानव को अहिंसा का समर्थन करना आवश्यक है। द्वितीय महाव्रत है, सत्य अर्थात वस्तु जैसी है उसे वैसे ही ग्रहण करना तथा वास्तविक अर्थ समझना सत्य महाव्रत है। तृतिय महाव्रत है अस्तेय, इसका अभिप्राय है मन, वचन, काया से बिना दी हुई वस्तु का ग्रहण करना, याने चोरी करना अस्तेय है। अर्थात इससे दूर रहकर ही मनुष्य जन्म सफल हो सकता है। चतुर्थ महाव्रत है अपरिग्रह, अपरिग्रह का तात्पर्य है केवल वस्त्र, स्वर्ण एवं अर्थ का त्याग नहीं बल्कि माया, मोह, मद, मत्सर का त्याग अपरिग्रह कहलाता है। अर्थात जितना आवश्यक है उतनाही ग्रहण करना अपरिग्रह है। पंचम महाव्रत है ब्रह्मचर्य, अर्थात ब्रह्मचर्य ही उत्तम तपस्या, नियम, चरित्र, दर्शन, संयम आदि की जड़ है। अत: इन महाव्रतों से मानव जीवन सार्थक होगा। भगवान महावीर ने अनेक जैन सिद्धांत फिर से समाज के सामने रखे। उसमें उन्होंने नई चेतना एवं नई दृष्टि भर दी।

प्रस्तुत अध्याय में मैंने उनके कुछ सिद्धांत को रखने का प्रयास किया है। उनका प्रथम सिद्धांत है अनेकांतवाद। अनेकांतवाद का तात्पर्य है एक ही घटना, वस्तु को अनेक दृष्टियों से देखना। अनेकांतवाद के संदर्भ में मैं इतनाही कहना चाहूँगा कि आज भारत-पाकिस्तान में जो आतंकवादी गतिविधियाँ चल रही है, उसपर एकमात्र उपाय अनेकांतवाद है। स्यादवाद अनेकांतवाद का ही विकसित वाद है। दोनों में एक ही विचार होते हुए कुछ हद तक एक दूसरे से अलग है। कर्म सिद्धांत आज हर मनुष्य को यथार्थ जीवन जीने के लिए प्रेरणादायी है। हर व्यक्ति को कर्म के अनुसार फल की प्राप्ति होती है। प्रमाद मनुष्य के अधोगति का प्रमुख कारण है। प्रमाद से घिरा आदमी कषायों में अटक जाता है। अत: प्रमाद और कषाय दोनों एक दूसरे के साथी है।

अत: इस प्रकार भगवान महावीर के अन्य दर्शन भी प्रस्तुत उपन्यास में मिलते हैं। अत: मैंने मेरे दृष्टि से महत्त्वपूर्ण दर्शन पर यहाँ चर्चा की है। अत: 'अनुत्तर योगी : तीर्थंकर महावीर' में चित्रित भगवान महावीर के उपर्युक्त दर्शन ही मानव को सफलता की चोटी पर पहुँचा सकता है।

जीवनीपरक उपन्यास के परिप्रेक्ष्य में 'अनुत्तर योगी' का अनुशीलन :

'अनुत्तर योगी तीर्थंकर महावीर' जीवनीपरक उपन्यास हिंदी साहित्य के रचनाधर्मिता में कथ्य और शिल्प की दृष्टि से सृजन की नई दिशा है। प्रस्तुत जीवनीपरक उपन्यास का अनुशीलन करनेपर निम्नलिखित निष्कर्ष मिलते हैं।

1. आधुनिकयुगीन अधिकतर उपन्यास पाश्चात्य साहित्य का अनुवाद प्रतित होते हैं। वहाँ प्रस्तुत उपन्यास विशुद्ध भारतीय उपन्यास की गंध छोड़ता है।
2. कथावस्तु पुराण, इतिहास और कल्पना से युक्त होने के कारण अत्यंत रोचक बनी है।
3. जीवनीपरक उपन्यास के प्रनेता रांगेय राघव जी के परंपरा को आगे बढाने का कार्य प्रस्तुत उपन्यास में किया है।
4. जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर यहाँ नायक है जो युगनेता, युगप्रवर्तक, मानवतावादी के रूप में पाठकों के सामने आते हैं।
5. पात्र एवं चरित्र-चित्रण की दृष्टि से प्रस्तुत उपन्यास पूर्णत: सफल अभिव्यंजना है। यहाँ पौराणिक, ऐतिहासिक एवं काल्पनिक पात्रों का मणिकांचन संयोग मिलता है।
6. प्रस्तुत उपन्यास में कथोपकथन दार्शनिक होते हुए भी रोचक, स्वाभाविक एवम् मौलिक गुणों से युक्त है।
7. प्रस्तुत उपन्यास में देशकाल वातावरण सहज अभिव्यक्त होता है। यहाँ राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक पृष्ठभूमि का चित्रण अत्यंत वास्तविक मिलता है।
8. भाषा की दृष्टि से प्रस्तुत उपन्यास विशुद्ध भारतीय रचना है, यहाँ अधिक तर शब्द दार्शनिक एवम् वैचारिक पृष्ठभूमि लेकर आते हैं। भाषा काव्यात्मक भंगिमा से युक्त है।
9. रचनाकार ने प्रसंगानुसार मुहावरें एवं कहावतों का भी प्रयोग किया है, जो अत्यल्प है।
10. प्रस्तुत उपन्यास रचना शिल्प की दृष्टि से महाकाव्यात्मक गरिमा से युक्त है।
11. यहाँ भाषा की सर्जनात्मक अभिव्यक्ति, शब्दचयन एवं वाक्यविन्यास में वैविध्यता, एवं काव्यात्मक अलंकृत भाषा आदि गुण मिलते हैं।
12. प्रस्तुत उपन्यास प्रमुखत: आत्मकथात्मक शैली में लिखा गया है। प्रसंगानुसार यहाँ वर्णनात्मक, पत्रात्मक, मनोविश्लेषणात्मक शैली का प्रयोग भी मिलता है।

13. उद्देश्य की दृष्टि से उपन्यास पूर्णत: सफल सिद्ध हुआ है। यहाँ नायक भगवान महावीर को मानवतावादी, युगपुरूष के रूप में दिखाया है। यहाँ भगवान महावीर में जैन धर्म की गंध तक नहीं मिलती। वह संपूर्ण मानवजाति के नेता हैं।

14. प्रस्तुत उपन्यास पुराण, इतिहास और कल्पना का योग होने से जीवनीपरक उपन्यास की सभी विशेषताएँ एवम् तत्वों को अपने आप में समा लेता है।

15. प्रस्तुत उपन्यास का शीर्षक पूर्णत: सार्थक सिद्ध हुआ है।

प्रस्तुत शोध-कार्य की उपलब्धियाँ :

1. प्रस्तुत उपन्यास भगवान महावीर के समकालीन पृष्ठभूमि को यथार्थ रूप में रखते हुए युगीन समस्याओं को चित्रित करता है।
2. कथानायक भगवान महावीर यहाँ युगपुरूष के रूप में सामने आते हैं। यह प्रस्तुत कृति की मौलिक उपलब्धि है।
3. नायक भगवान महावीर आधुनिक युगीन युवा वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं। वे युगपुरूष तथा विद्रोही दिखाई देते हैं।
4. जीवनीपरक उपन्यास की दृष्टि से प्रस्तुत रचना कथावस्तु तथा शिल्पगत मौलिकता से युक्त है।
5. प्रस्तुत जीवनीपरक उपन्यास गद्यविधा की दृष्टि से पूर्णत: सफल है। इसे भारत का शुद्ध उपन्यास कह सकते हैं। यहाँ महाकाव्यात्मक गरिमा भी मिलती है। उपन्यास का शिल्प उपन्यास होते हुए भी महाकाव्य बनने के लिए मजबूर है।
6. यहाँ शिल्पगत विशेषता के अंतर्गत जीवनीपरक उपन्यास को प्रमुखता से आत्मकथात्मक शैली में रखा गया है।

अध्ययन की नई दिशाएँ :

'अनुत्तर योगी तीर्थंकर महावीर' के लिए निम्नलिखित अध्ययन की नई दिशाएँ तय कर सकते हैं -

1. 'अनुत्तर योगी तीर्थंकर महावीर' में मिथक योजना।
2. 'अनुत्तर योगी' में चित्रित भगवान महावीर की चरित्रगत विशेषताएँ।
3. 'अनुत्तर योगी' शिल्पगत अवधारणा।

****